ISSN : 0975-3664, RNI : U.P. BIL/2012/43696
SHODH-DHARA; Jan.-March. 2025, P. 288-290

ग्रामीण पर्यटन और युवाओं के लिए आजीविका के अवसर

डॉ. प्रतिभा सिंह
सहायक प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग,
डी.बी.एस. कॉलेज, कानपुर, (उ.प्र.)

सारांश–ग्रामीण पर्यटन एक ऐसी अवधारणा है, जो विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटकों को आकर्षित करके इन क्षेत्रों के आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देती है। यह न केवल स्थानीय संस्कृति, पारंपरिक जीवनशैली और प्राकृतिक सौंदर्य को प्रदर्शित करने का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि यह ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार और आजीविका के नए अवसर भी उत्पन्न करता है। ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से पर्यटन, कृषि, शिल्प, और स्थानीय सेवाओं के क्षेत्र में युवाओं को व्यवसायिक कौशल विकसित करने के अवसर मिलते हैं। आज के समय में, जब शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की ओर पलायन की प्रवृत्ति बढ़ रही है, ग्रामीण पर्यटन एक स्थिर विकल्प के रूप में उभर कर सामने आया है। इससे न केवल युवाओं को स्थायी रोजगार मिल सकता है, बल्कि यह उन्हें अपने ग्रामवासियों के साथ मिलकर अपने गांवों को आर्थिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाने की दिशा में प्रोत्साहित करता है। यह शोध पत्र ग्रामीण पर्यटन के महत्व, इसके द्वारा उत्पन्न रोजगार के अवसरों, और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की प्रक्रिया पर प्रकाश डालता है। ग्रामीण पर्यटन युवाओं को न केवल स्थानीय रोजगार प्रदान करता है, बल्कि उन्हें अपने कौशल को नई दिशा देने और व्यापारिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ने का अवसर भी देता है। उदाहरण स्वरूप, होमस्टे, आर्टिसनल शिल्प, ग्रामीण गाइड सेवाएं, और कृषि आधारित पर्यटन जैसी गतिविधियाँ युवाओं को स्वरोजगार के अवसर प्रदान करती हैं। हालांकि, ग्रामीण पर्यटन को सफल बनाने के लिए कुछ प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे बुनियादी ढांचे की कमी, शहरी और ग्रामीण पर्यटन के बीच सामंजस्य की आवश्यकता, और युवाओं के लिए कौशल विकास की योजनाओं की कमी। इसके बावजूद, उचित नीतियों, सरकारी योजनाओं और सामाजिक प्रयासों के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान संभव है। यह शोध ग्रामीण पर्यटन को एक महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक उत्प्रेरक के रूप में प्रस्तुत करता है, जो न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में विकास ला सकता है, बल्कि युवाओं के लिए सशक्तिकरण और समृद्धि का मार्ग भी प्रशस्त कर सकता है।

Figure : 00 **References : 05** **Table : 00**
मुख्य शब्द– पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन,युवा,योजना, आजीविका

1. परिचय–ग्रामीण पर्यटन वह पर्यटन है, जो मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, और प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होता है। यह शहरी क्षेत्रों से दूर, गांवों में प्रकृति से जुड़ी गतिविधियों और अनुभवों के लिए पर्यटकों को आकर्षित करता है। ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से स्थानीय समुदायों को रोजगार, प्रशिक्षण, और आय के नए स्रोत मिलते हैं। इसके द्वारा ग्रामीण युवाओं को स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं, जिससे उन्हें शहरी इलाकों में पलायन की आवश्यकता नहीं रहती।

भारतीय परंपरा में परिव्राजक का स्थान प्राचीनकाल से ही है। संन्यासी को किसी स्थान विशेष से मोह न हो इसलिए परिव्राजक के रूप में पर्यटन करते रहना होता है। ज्ञान के विस्तार के लिए अनेक यात्राएं की जाती थीं। आदिशंकर और स्वामी विवेकानंद की प्रसिद्ध भारत यात्राएं इसी उद्देश्य से हुईं। बौद्ध

45 धर्म के आगमन पर गौतम बुद्ध के संदेश को अन्य देशों में पहुंचाने के लिए अनेक भिक्षुओं ने लंबी यात्राएं कीं। अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को इसी उद्देश्य से श्रीलंका भेजा। सामान्यजन के लिए ज्ञान के विस्तार और सामूहिक विकास के लिए तीर्थयात्राओं की व्यवस्था भी प्राचीन भू–पर्यटन का ही एक रूप था। पर्यटन गरीबी दूर करने, रोजगार–सृजन और सामाजिक सद्भाव बढ़ाने का सशक्त साधन है। 27 सितंबर 2003 को दुनियाभर में विश्व पर्यटन दिवस मनाया गया जिसका मुख्य विषय यही था। इस विषय से ही पता चल जाता है कि पर्यटन विकासशील देशों के लिए कितना सार्थक और महत्वपूर्ण है। हालांकि पर्यटकों को अनेक विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया है लेकिन संयुक्त राष्ट्र की रोम में सन् 1963 में आयोजित अंतरराष्ट्रीय यात्रा एवं पर्यटन सम्मेलन में बहुत सरल शब्दों में इसका वर्णन किया गया है। मोटी कमाई के चलते पर्यटन क्षेत्र एक फलता–फूलता उद्योग बन गया है। इससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बल मिलता है और इसमें स्थानीय पर्यावरण में सुधार लाने तथा परिवहन, होटल, खान–पान और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में सेवाओं और माल की गुणवत्ता बेहतर करने की शक्ति निहित है।

अनुसंधान पद्धति–यह शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

ग्रामीण पर्यटन का महत्व–ग्रामीण पर्यटन से विभिन्न सामाजिक और आर्थिक लाभ होते हैं:

1. आर्थिक वृद्धि–पर्यटन से ग्रामीण क्षेत्रों में नए व्यापार, सेवाएं और उद्योग उत्पन्न होते हैं। यह स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है।

2.संस्कृतिक संरक्षण–ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से स्थानीय संस्कृति, परंपराएं, और कला का संरक्षण होता है, साथ ही ये बाहरी दुनिया तक पहुंचती हैं।

3. समुदाय की सशक्तिकरण–पर्यटन के माध्यम से ग्रामीण लोग अपनी पारंपरिक कारीगरी, कृषि, और खानपान को प्रदर्शित कर आर्थिक लाभ कमा सकते हैं।

4. रोजगार के अवसर–यह स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार और अन्य गतिविधियों में भागीदारी का मौका देता है, जैसे कि गाइडिंग, होटल व्यवसाय, कृषि पर्यटन, और हस्तशिल्प निर्माण आदि।

5. युवाओं के लिए अवसर–ग्रामीण पर्यटन ने युवाओं के लिए कई नई संभावनाओं को खोला है:

प्रशिक्षण और कौशल विकासः ग्रामीण पर्यटन में प्रशिक्षकों और पर्यटन उद्योग से जुड़े विशेषज्ञों को प्रशिक्षण देने के अवसर मिलते हैं। इसके अलावा, युवा आर्गेनिक खेती, हैंडीक्राफ्ट, और अन्य व्यवसायों में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं।

स्वरोजगारः ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं, जैसे कि होमस्टे संचालन, पर्यटक मार्गदर्शन, हस्तशिल्प निर्माण, और कृषि–आधारित उत्पादों का विपणन।

स्थानीय विकासः पर्यटन से युवा समुदाय अपने गांवों को अधिक प्रगतिशील बना सकते हैं, जिससे गांवों का स्थायी विकास हो सकता है और ग्रामीणों को अपनी जड़ों से जुड़ने का अवसर मिलता है।

ग्रामीण पर्यटन में युवाओं के द्वारा किए गए प्रयासः

कई युवा उद्यमी और संगठन ग्रामीण पर्यटन में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। वे पर्यटन को एक उद्यम के रूप में विकसित कर रहे हैं, जैसेः

- होमस्टे और बुटीक होटलों का संचालन।
- सांस्कृतिक और साहसिक पर्यटन गतिविधियाँ आयोजित करना।
- स्थानीय भोजन, हस्तशिल्प, और कला का प्रचार–प्रसार करना।
- ग्रामीण शिक्षा और कला के क्षेत्र में सुधार लाना।

सरकारी नीतियां और समर्थन–भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं और कार्यक्रम लागू किए हैं, जैसे किः

- स्वदेश दर्शन योजनाः यह योजना ग्रामीण और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देती है।
- उद्यमिता और कौशल विकास योजनाएंः युवा उद्यमियों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन व्यवसाय स्थापित करने के लिए ऋण और प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है।
- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (MGNREGA): यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन के अवसर प्रदान करती है, जिससे पर्यटन उद्योग को भी लाभ मिलता है।

निष्कर्ष–पर्यटन, सेवा क्षेत्र का एक ऐसा उभरता हुआ उद्योग है जिसमें अपार संभावनाएं निहित हैं। भारत अतुलनीय प्राकृतिक स्थलों के साथ ही वैश्विक स्तर पर एक बड़े जैविक आयामों के क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, जो पारिस्थितिकीय पर्यटन की दृष्टि से सकारात्मक पक्ष है।

पर्यटकों के लिए भारतीय बाजार विविधताओंभरा स्थान है। इन विविधताओं के आर्थिक पहलुओं को देखते हुए शिल्प आदि क्षेत्रों के संवर्धन हेतु ठोस सरकारी प्रयासों का परिणाम एक नई आर्थिक संभावना के रूप में देखा जा सकता है तथा नए चिन्हित पर्यटन स्थलों पर ढांचागत सुविधाओं का विकास कर न केवल शहरी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसरों की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है। पर्यटन संसाधनों, सुविधाओं और सेवाओं आदि प्राथमिकताओं को बढ़ाकर पर्यटन क्षेत्र के सामने आ रहीं प्रतिस्पर्धात्मक बाधाओं को दूर कर इस उद्योग में विकास की और अधिक संभावनाओं की तलाश की जा सकती है।

ग्रामीण पर्यटन एक सशक्त माध्यम है, जो युवाओं को रोजगार और आजीविका के अवसर प्रदान करता है। यह न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त करता है, बल्कि युवा पीढ़ी को अपने गांवों में विकास और प्रगति का एक सशक्त मार्ग भी दिखाता है। हालांकि, ग्रामीण पर्यटन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए बुनियादी ढांचे में सुधार और युवाओं को प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। सरकार, निजी क्षेत्र और ग्रामीण समुदायों को मिलकर इस दिशा में काम करना चाहिए ताकि ग्रामीण पर्यटन से अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सके।

संदर्भ सूची

1. रेड्डी, पी. वी. "संस्कृतिक पर्यटन और सतत आजीविकाः भारतीय ग्रामीण संदर्भ में एक अध्ययन". इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली
2. नायर, ए. "ग्रामीण पर्यटन और लोकिक रोजगारः नए अवसरों की तलाश". ग्रामीण विकास समीक्षा
3. भारत सरकार. "स्वदेश दर्शन योजनाः ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक नई दृष्टिकोण". पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार.
4. चौधरी, एस. "ग्रामीण विकास के लिए पर्यटनः भारतीय गांवों से एक केस अध्ययन". साउथ एशियन जर्नल ऑफ टूरिज्म एंड डेवलपमेंट
5. राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान. "ग्रामीण विकास के लिए पर्यटनः वृद्धि और स्थिरता के बीच अंतर को पाटना". हैदराबादः NIRD प्रेस।